आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2478 • उदयपुर, शुक्रवार 08 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

राजश्री का जीवन हुआ आसान

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकटस्थ गांव नारियल खेड़ा निवासी राजश्री ठाकरे (21) का जन्म से ही दांया हाथ बिना पंजे के था। पिता दशरथ ठाकरे मजदूरी करके पांच सदस्यों के परिवार का पोषण कर रहे थे। सितम्बर 2019 में पिता का देहांत हो गया।

राजश्री ने एक कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। कृत्रिम पंजा अथवा हाथ लगाने के लिए भोपाल के एक बड़े अस्पताल से सम्पर्क भी किया लेकिन आर्थिक तंगी के चलते सम्भव नहीं हो पाया। राजश्री पार्ट टाइम नौकरी कर परिवार पोषण में मदद कर रही है।

भोपाल में 22 जनवरी 2021 को नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर में राजश्री ने भी पंजीयन करवाया। जहां संस्थान के ऑर्थोटिस्ट–प्रोस्थोटिस्ट ने इनके लिए पंजे सहित एक विशेष कृत्रिम हाथ तैयार किया। राजश्री इस हाथ से अब दैनन्दिन कार्य के साथ लिखने का काम भी आसानी से कर लेती है।

बागोदरा में दिव्यांगों को दौड़ाने का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय, आश्रम एवं विविध शाखाओं द्वारा दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व सहायक उपकरण प्रदान करते हुए उन्हें मूलधारा से जोड़ने का प्रयास निरंतर जारी है।

संस्थान द्वारा लाखों ऑपरेशन व कृत्रिम अंग प्रत्यारोपित किये जाकर दिव्यांगों को स्वयं का सहारा स्वयं बनने का अवसर प्रदान किया जा रहा है।

ऐसा ही एक और प्रयास बागोदरा (अहमदाबाद) में मंगल मंदिर मानव सेवा–परिवार द्वारा 17 सितम्बर 2021 का संपन्न हुआ। इस शिविर में कुल 93 दिव्यांग आये। इनमें से 41 के कृत्रिम अंगों के माप लिये गये तथा 8 को कैलिपर्स प्रदान किये गये।

शिविर में मुख्य अतिथि श्री भूपेन्द्र सिंह सुदासमा (पूर्व मंत्री एवं विधायक महोदय), अध्यक्ष श्री कांतीभाई निकुम

(पूर्व विधायक महोदय बावला), विशिष्ट अतिथि श्री रमेश भाई मकवाना(उप जिला प्रमुख अहमदाबाद), श्री प्रभात बाबुभाई मकवाना (समाजसेवी), श्री रमेश जी भाई ठुमार (समाजसेवी), श्री विक्रम भाई मण्डोरा (समाजसेवी), श्री दिनेश भाई एम लाठिया (मंगल मंदिर परिवार प्रमुख), श्री भरत भाई सोलंकी (समाजसेवी), श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह जी (शाखा प्रेरक) का पदार्पण हुआ। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी सहित टीम के साथी श्री नरेन्द्रसिंह झाला, श्री प्रकाश डामोर (सहायक), श्री नाथुसिंह जी (टेक्नीशियन), श्री उत्तमचंद जी (टेक्नीशियन), श्री रक्षिता वघासीया (फिजियोथेरेपीस्ट) ने सेवायें दीं।

अबोहर (पंजाब) में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की शाखा अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में गत 12 सितम्बर 2021 को दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्री बालाजी समाज सेवा संघ रहा। शिविर में 210 दिव्यांगों की ओपीडी, 39 का ऑपरेशन चयन, कैलिपर्स का माप एवम् कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री मान राजेन्द्रपाल जी (समाजसेवी), अध्यक्ष श्री गंगन जी मल्हौत्रा, (चैयरमेन बालाजी समाज सेवा संघ), विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई पधारे।

शिविर में डॉ एस.एल गुप्ता जी ने सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से श्री मान् मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), उपस्थित रहे।

संस्थान द्वारा बरेली में राशन सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान आश्रम बरेली (उत्तरप्रदेश) में आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 60 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये।

शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं–मुख्य अतिथि श्रीमान अटेश जी गुप्ता, अध्यक्ष श्रीमान गोल्डी जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्रीमान रानू जी गुप्ता, श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान् सुदेश जी गुप्ता, श्रीमान संजीव जी गुप्ता, श्रीमती सीमा जी,(समाजसेवी), एवं श्रीमान कंवरपाल सिंह जी (शाखा सेवा प्रेरक बरेली)।

शिविर में प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाएं देखीं। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले भेंट किए गए।

नवरात्रि में पाएं मां दुर्गा की कृपा

नवरात्र यानि 9 विशेष रात्रियां। इस समय को शक्ति के 9 रूपों की उपासना का श्रेष्ठ काल माना जाता है। 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक है। प्रत्येक संवत्सर (साल) में 4 नवरात्र होते हैं जिनमें, दो बार नवरात्रों में आराधना का विधान है। विक्रम संवत के पहले दिन अर्थात् चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से 9 दिन यानी नवमी तक नवरात्र होते हैं। (इस साल यह 7 से 15 अक्टूबर 2021 तक है) ठीक उसी तरह 6 माह आश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी यानी विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक देवी की उपासना की जाती है। सिद्धि और साधना की दृष्टि से शारदीय नवरात्र में लोग आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति के संचय, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग–साधना आदि अनुष्ठान करते हैं। देवी (शक्ति) की उपासना आदिकाल से चली आ रही है। वस्तुतः श्रीमद्देवी भागवत महापुराण के अंतर्गत देवासुर संग्राम का विवरण दुर्गा की उत्पत्ति के रूप में उल्लेखित भी है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बापूजी बहुत सत्संगी थे, बापूजी रामायण के भक्त थे। माता–पिता के भक्त थे जिन्होंने अपने पूज्य बड़े भाईसाहब की सेवा के लिए अरबोंपति दत्तक पिताजी को भी कहा आपको तो आपको दत्तक पुत्र और भी मिल जायेगा लेकिन आपने मेरे पर बंदिश लगा दी। तो बड़े भाई से कभी मिलना नहीं तुम्हारा बड़े भाई को कभी पोस्टकार्ड नहीं लिखना।

यदि तूने पत्र भी लिख दिया फोन तो होते ही नहीं थे। होते थे तो लाईटिंन फोन। कहां पैसा कहा आठ गुना पैसा हर जगह एक्सचेंज भी नहीं तो बोले तूने पोस्टकार्ड भी लिख दिया तो मैं तेरे को दण्ड़ दूंगा। तो पिताजी ने कुछ दिनों बाद एक चिट्टी लिखी आपको दत्तक पुत्र और भी मिल जायेगा। आपकी बहुत सेवा करेगा पर जिन एक माँ के एक गर्भ से दो बेटों ने जन्म लिया एक मेरा बड़ा देवीलाल दो–तीन साल बड़ा भाई और आपने कहा पोस्टकार्ड भी मत लिखना। इसको मेरा त्याग पत्र स्वीकार कर लें। मैं लिखकर के त्याग पत्र दे रहा हूँ, मैं मेरे बड़े भाई के पास जा रहा हूँ। मैं नहीं रह सकता अपने बड़े भाई के बिना। इतनी बंदिशें मत लगाइये, इतने बन्धन मत डालिये कि वो छटपटा उठे। अपनी तानाशाही को रोक दीजिए। सनकी मत बनिये।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाता है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध कवि ने बहुत ही प्रेरक गीत लिखा है – सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा। इसके पीछे अनेक प्रकार की भावात्मक बातें है हमारा मुल्क हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ तो होता ही है, किन्तु कई ऐसी विशेषतायें भी हैं जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग व श्रेष्ठ सिद्ध करती है। यह अपना ही देश है जहाँ विश्व के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। न केवल रहते हैं वरन उनका सामाजिक ताना बाना भी सुदृढ़ है। सर्वधर्म समभाव के वाक्य को चरितार्थ होता देखना हो तो यहां है। ज्ञान और विज्ञान का समन्वय यहां सदियों से हैं। विज्ञान को भौतिक व ज्ञान को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। ज्ञानी और विज्ञानी को यहाँ समान सम्मान मिलता रहा है। यहां की एक और परम उपलब्धि है कि भारतीय संस्कृति ने सभी संस्कृतियों को आत्मसात् किया है। हरेक धर्म व संस्कृति को पूरा सम्मान दिया है। सबके कल्याण का भाव भी यहीं दिखाई देता है। इसलिये तो जहां से अच्छा है हमारा देश।

कुछ काव्यमय

कोई भी देश
केवल भूमि का खण्ड
नहीं होता है।
वह अपने निवासियों को अपनी
गरिमा, संस्कृति और
भावनाओं में भिगोता है।
अपने देश को इसमें महारत है।
इसलिये सबसे ऊँचा भारत है।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सेवा धर्म महान

बाल्मीकी ऋषि को भगवान ने पूछा– प्रभु आप तो बहुत ज्ञानी है। तपस्वी है, ब्रह्मऋषि है। आप मुझे बताईये, मैं कहाँ निवास करूं? वाल्मीकी ऋषि जी मुस्कराये और बोले– प्रभु, पार ब्रह्म परमात्मा कहीं कहीं संत आपको कहते है।

शांताकारम् भुजगशयनम्,
पद्मनाभं सुरेशम्।

कहीं–कहीं संत आपको कहते है

श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन,
हरण भव भय दारूणम्।
नवकन्ज लोचन, कन्ज मुख,
कर कन्ज पद कंजारूणम्।।

प्रभु मुझे वो स्थान बताओ, आप तो सर्वज्ञ हो, आप प्राणी मात्र में स्थित हो। आप नर–नारी में हो, आप नदी–जल में हो, आप पहाड़ में हो, आप इस फल में हो। आप इन वस्तुओं में, सब में आप हो। आप कहाँ निवास करें, ये मुझसे पूछ रहे है, प्रभु?

राम की केवल प्रेम प्यारा।
जान लेई जो जानन हारा।।

आप सब में बसे हुए हो प्रभु। प्रभु श्री राम की तरफ देखकर, वाल्मीकी जी मुस्करा कर बोलते है। जब खर– दूषण आये थे आपने लक्ष्मण जी को कहा था– लक्ष्मण तुम सीते के पास रहो। आपने लक्ष्मण को कहा था– लक्ष्मण तुम रहो। मैं अकेला ही इसका वध कर दूंगा। आप हजारों राम बन गये थे। सब में परमात्मा है जो अपने माता– पिता की सेवा करें। जिसका मन इस दर्पण के समान हो। जब भी दर्पण देखे, बार–बार सोचे– मैं अपने अन्दर ऐसे गुणों को पैदा करूंगा जिससे मैं गुणवान कहलाऊँ। प्रज्ञावान हो जाऊँ, सद्बुद्धिमान हो जाऊँ, समझदार हो जाऊँ। मैं पराये आँसूंओं को पौंछ सकूं।

मैं लोगों के मरहम लगा सकूं।
युग–युग के घावों को धोकर,
मरहम हमें लगाना है।

सच्ची सेवा प्रभु पूजा है,
उत्तम यज्ञ विधान है।
दरिद्र नारायण बनकर आता,
कृपासिंधु भगवान है।
ये सेवाधर्म महान है।

रोहित जी– गुरूदेव, प्रश्न एक भाई का ही है जिन्होंने अपना नाम तो नहीं लिखा है। मगर इन्होंने कहा है कि– इनके बड़े भाई साहब जो है वो इनके साथ ही काम करते हैं, हमेशा असन्तुष्ट रहते हैं कि मुझे ईश्वर ने कम दिया। मुझे तुम भी कम प्यार करते हो।

गुरूजी– वो रोवणिया, वो रोवणी बाई। क्यों मीनाजी याद है, एक रोवणी बाई थी जो रोवती ही रहती थी। वो जो देखा जो, बीस साल रो जीका दोही हाथ कट्योड़ा है। दोही पैर कट्योड़ा है। फिर भी मुस्कराई रयो है। रोवणी बाई कियो कि– फिर भी मुस्कराई रयो है? अरे! अणीरा दोही हाथ–पग नी है तो भी राजी– राजी रेई रियो है? म्हारे पास सब कुछ है, मैं रोई रयो हूँ।

असन्तुष्ट भाव रखना पाप है। हमेशा असन्तुष्ट रहना, अपने आपको नरको मे झौंकना हैं। कहते है ना, जीता जागता स्वर्ग भी है, नरक भी है। कि भाई, अणी जीवन में ही स्वर्ग, अणी जीवन में ही नरक। ऊपर रो नरक कूण देखियो है। भूखा है तो रोटी खिला दो। दिव्यांग आए तो ऑपरेशन करा दो। दिव्यांग रे प्लास्टर ऑफ पेरिस रो प्लास्टर बंधियो है। ईको एक पग सीधो वेईग्यो। अब ये प्लास्टर कटी जावेगा, दूजा पग रे ऑपरेशन वेई जाई। अणी दिव्यांग ने कम्प्युटर सिखाई दो। देखो प्लास्टर लागियो है एक पैर में। फिर भी कम्प्युटर री क्लास में बैठियो है।

प्लास्टर लागियो है फिर भी मोबाईल सीखीरिया है, ये सिलाई सीखीरिया है। भगवान री कृपा है। असन्तुष्ट मत रहो, सन्तुष्ट हो जाओ। वाल्मीकी जी ऋषि ने यही कहा है। जो करूणा रखते है, जो सुख–दुःख में समभाव रखते है। जो राग–ईर्ष्या से रहित है, जो सन्तुष्ट रहते है। जो दृढ़ निश्चयी रहते है। जो अपने भतीजे में और अपने बेटे में भेद नहीं करते। जो अपने भाणेज को भी प्रिय मानते है। ऐसे हृदय में आप निवास कीजिये। पार ब्रह्म परमात्मा, यहाँ के पास ही चित्रकूट है।

चित्रकूट गिरि करहु निवासा,
कहत मारी सब भाती सुपासा।

चित्रकुट पर्वत धन्य हो जायेगा। कितने सुन्दर राजकुमार है। ये सीताजी ने तो, हम तो मुग्ध हो गये। जीन सीताजी ने कभी कहा था।

सुख में आ आ कर घेरूं,
सकंट में अब मुँह फेरूं।।
देखेगा तो कौन किसे,
रहना होगा मौन जिसे।

– कैलाश 'मानव'

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

पई पहुँचने में सवा घन्टा लगा। पई में पहले से ही सौ–सवा सौ लोग प्रतीक्षारत थे। बस के पहुँचते ही सब उसे घेर कर खड़े हो गये। इन्हें देखकर कैलाश का मन प्रसन्न हो गया कि सब हाथों हाथ सामान उतरवा कर कार्य में हाथ बंटायेंगे। कैलाश ने इनमें से कुछ लोगों को बस पर चढ़ कर सामान उतरवाने में मदद करने को कहा तो एक व्यक्ति तक नहीं हिला, सब हाथ बांधे खड़े रह गए। कैलाश आश्चर्यचकित था, उसने उदयपुर से आये अपने साथियों को बस पर चढ़ाया और सारा सामान खाली कर पास ही स्थित एक चबूतरे पर जमा दिया।

सामान में सत्तू व कपड़ों के अतिरिक्त मफत काका द्वारा भेजे गये विदेशी दूध के पाउडर के डिब्बे भी थे। मफत काका का आग्रह था कि इस पाउडर का दूध बनाकर, उससे दही जमाया जाये तथा दही से छाछ बनाकर ग्रामवासियों को पिलाई जाये। धीरे–धीरे लोगों की संख्या बढ़ने लगी। सभी लोग घेरा बनाकर सामान के पास भीड़ करने लगे जिससे काम करने में कठिनाई होने लगी। इन तमाम लोगों को कतारें बनाकर बिठाया गया तब कहीं जाकर व्यवस्था बनी।

कैलाश ने वातावरण को धार्मिक स्वरूप देते हुए जयकारे लगवाने शुरू कर दिये। थोड़ी देर यही क्रम चला, जब सभी लोग अनुशासित हो एकाग्रचित्त हो गये तो कैलाश उन्हें शराब छोड़ने का उपदेश देने लगा। शराब की बुराइयों का जिक्र करते हुए कहा कि हम जा आहार आपके लिये लाये हैं, यह तो आप खा कर खतम कर दोगे मगर शराब छोड़ दोगे तो आप जीवन में आगे बढ़ सकोगे।

इस बीच सभी लोगों के कार्ड बनाना शुरू कर दिया। कार्ड, बीसलपुर पद्धति का अनुसरण करके छपवा लिये गये थे। इसी दौरान सभी लोगों में चर्म रोगों की भारी समस्या दृष्टिगोचर हुई। बच्चे तो फोड़े–फुन्सियों से ग्रसित थे ही बड़े भी इनसे पीड़ित नजर आ रहे थे, सबके नाखून बढ़े हुए थे बाल बढ़े हुए थे।

दोपहर तीन बजे तक अपने साथ लाया समूचा आहार बांट दिया गया। जरूरतमंदों को कपड़े भी दे दिये। स्कूली बच्चों के लिये कुछ ड्रेसें भी साथ लाये थे, इनका भी वितरण कर दिया गया। दूध के पाउडर से छाछ कैसे बनानी है, इसका तरीका भी वहां आगे आये कुछ लोगों को समझा कर सभी लोग वापस उदयपुर लौट आये।

अंश - 130

देने का आनंद

प्रसन्नता तो चंदन है,
दूसरे के माथे पर लागाइए
आपकी अंगुलियाँ
अपने आप महक उठेंगीं।

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे हैं, जो सम्भवतः पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, "गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएँ, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।"

शिक्षक गम्भीरता से बोला, "किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है?" शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छिप गए। मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसके जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अंदर कुछ सिक्के थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट–पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर–उधर देखा। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब मे डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव–विभोर हो गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा, "हे भगवान! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।"

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आईं। शिक्षक ने शिष्य से कहा, "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली?"

शिष्य बोला, "आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी है। देने का आनन्द असीम है, देना देवत्व है।"

यदि आप पैंसिल बनकर
किसी का सुख नहीं लिख सकते,
तो कोशिश करो कि रबड़ बनकर,
दूसरों का दुःख मिटा दो।

– सेवक प्रशान्त भैया

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

1,40,400 शल्य चिकित्सा
संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण
25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण
10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी
सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजन।

250 एनजीओ को लेंगे गोद
प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत
सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

22,46,400 रोगियों की नि:शुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा
25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

नि:शुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथैरेपी केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

अनुभव अमृतम्

चिट्ठियाँ तो बहुत आती है। भोजन किया चिट्ठी खोली तो उसमें ट्रांसफर का आर्डर था। आपको सूचित किया जाता है कि आपका ट्रांसफर एसएसपी कोटा के अन्तर्गत, चुरू जिले में सरदार शहर में इंस्पेक्टर ऑफ पोस्ट ऑफिसेज हो गया है। उसी आर्डर में था कि कोटा के एएसपी साहब, पोस्ट अपग्रेड हो गयी। झालावाड़ के आईपीओ की पोस्ट एएसपी की पोस्ट हो गयी। और चूंकि कैलाश अग्रवाल बहुत जूनीयर, हाँ अभी ढाई महिने पहले तो आईपीओ बना। एएसपी साहब राठौड़ साहब। जो झालावाड़ के रहने वाले है– वो आऐंगे। कोई बात नहीं साहब। ज्योतिषि की बात सही हुई। आज ही उन्होंने कहा था– स्थान परिवर्तन के योग है। जो मस्तिष्क की रेखा देखते हैं, हाथ भी नहीं देखी। कोई बात नहीं, सामान बांधा। कमलाजी ने कहा– सामान अभी थोड़े दिन पहले ही आया है। कोई बात नहीं कमलाजी, सरकार की सर्विस है। सेन्ट्रल गर्वनमेंट पीएण्डटी डिपार्टमेंट पोस्ट ऑफिस। सरदार शहर चलेंगे। एक दिन बाद एक पत्र और आया, आप आईपीओ साहब हैं लेकिन चूंकि आप मोर्स नहीं जानते थे। तार देना नहीं जानते थे। आप कभी क्लर्क, आप कभी तार बाबू नहीं रहे, इसलिये एक महिने की आपकी ट्रेंनिग है– जयपुर में। आप ज्वाईन तो कर लीजिए। ज्वाईन करने के एक महिने के बाद आपकी वॉल्यूम नाईन की परीक्षा होगी। आपको टेलीग्राफ काभी इंसपेक्शन करना। ज्वाईन किया सरदार शहर और दो दिन बाद ही एक महिने के लिये जयपुर आ गये। परम् आदरणीय भामाशह महोदय जी, सम्माननीय साधक भाइयों–बहनों। प्रशान्त भैया, जगदीशजी आर्यसाहब, देवेन्द्र जी चौबीसा, कमलाजी, वन्दना जी। मनोबल बहुत मजबूत रखना है। हाँ, महाराज।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 257 (कैलाश 'मानव')

कुद्दू के आटे से पित्त का शमन

चरक संहिता के अनुसार कुट्टू के आटे में जिंक, आयरन, मैग्निशयम, फैट, अमीनो एसिड और विटामिन्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसमें कटु, तिक्त और कषाय रस होते हैं, जो खाने में अरूचि को दूरकर पित्त का शमन करते हैं। मौसम, व्रत और त्योहार के अनुसार ये पाचनतंत्र के कार्य को सुचारू रखते हैं। इनमें कई तरह के सूक्ष्म पोषक तत्व भी होते हैं।

गुणकारी छाछ

छाछ पाचन तंत्र को दुरस्त रखती है। आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार बिना मक्खन की ताजा छाछ एसिडिटी, खट्टी डकार व पेट की जलन सही करती है। इसमें थोड़ा सेंधा नमक डालकर पीएं। मक्खन वाली, लस्सी व दही की श्रेणी में आती है, जिसमें फैट अधिक होता है। इससे कम लाभ मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023